प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

संस्कृति समझ-बूझ के साथ शांति पर रची गई है। जो काम प्रेम व शांति से होता है, वह वैर-भाव से नहीं होता।
- सरदार पटेल

आर्थिक समीक्षा में जीएसटी और इन्सॉलवेंसी ऐंड बैंकरप्सी कोड को मोदी सरकार के पिछले कार्यकाल के अहम ढांचागत सुधारों के रूप में दर्ज किया गया है, अब उसके पास सुधार की इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का अवसर है।

आर्थिक चुनौतियों से सामना

मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल की पहली आर्थिक समीक्षा ने देश की अर्थव्यवस्था को पचास खरब डॉलर तक पहुंचाने का खाका तो खींचा है, लेकिन इसके साथ ही उन चुनौतियों को भी रेखांकित किया है, जिनसे फौरी तौर पर निपटने की जरूरत है। पिछली आर्थिक समीक्षा में 2018-19 के दौरान सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर के सात से साढ़े सात फीसदी तक रहने का अनुमान व्यक्त किया गया था, मगर यह 6.8 फीसदी रही। बृहस्पतिवार को संसद में पेश की गई आर्थिक समीक्षा के मुताबिक, 2025 तक देश को पचास खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए प्रति वर्ष आठ फीसदी की विकास दर चाहिए, लेकिन 2019-20 में इसके सात फीसदी रहने का अनुमान है। मुख्य आर्थिक सलाहकार कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यम ने वित्तीय मजबूती पर जोर दिया है, जिसके लिए अर्थव्यवस्था के तमाम घटकों पर ध्यान देना जरूरी है। अच्छी बात यह है कि राजकोषीय घाटा काफी हद तक नियंत्रित है और अंतरिम बजट में व्यक्त किए गए अनुमान की तरह यह 3.4 फीसदी रह सकता है। मगर रोजगार सृजन और नया निवेश सरकार की बड़ी चुनौतियों में शामिल है। आर्थिक समीक्षा ने एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग) की ऐसे क्षेत्र के रूप में शिनाख्त की है, जहां रोजगार पैदा करने की काफी संभावनाएं हैं। इसके मुताबिक विनिर्माण क्षेत्र की संगठित इकाइयों में से पचास फीसदी से अधिक ऐसी इकाइयां हैं, जहां सौ से कम कर्मचारी हैं, लेकिन यह सिर्फ 14 फीसदी रोजगार देती हैं और उत्पादकता में उनकी हिस्सेदारी सिर्फ आठ फीसदी है। उम्मीद की जा सकती है कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण अपने पहले बजट में इस पर ध्यान देंगी। वहीं, पीएम किसान सम्मान निधि के तहत पांच करोड़ किसानों को लाभ मिल चुका है, लेकिन किसानों की आय दोगुना करना एक बड़ी चुनौती है। संभवतः पहली बार पानी के संकट को आर्थिक समीक्षा का हिस्सा बनाया गया है और कहा गया है कि 2050 तक भारत में 'पानी की किल्लत' एक बड़ी समस्या होगी, ऐसे में सिंचाई जल पर तुरंत विचार करने की जरूरत है, ताकि कृषि की उत्पादकता बढ़ सके। जीएसटी और इन्सॉलवेंसी ऐंड बैंकरप्सी कोड (आईबीसी) को मोदी सरकार के पिछले कार्यकाल के अहम ढांचागत सुधारों की तरह देखा जाता है, अब उसके पास सुधार की इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का अवसर है।

अमेरिका को क्यों नहीं सुहाता भारत-रूस संबंध

परमाणु पनडुब्बी के लिए मॉस्को के साथ हुई सौदेबाजी पर अमेरिकी नाराजगी भले ही रूस से उसकी अनबन का नतीजा हो, पर इससे भारत-रूस रक्षा संबंधों पर असर नहीं पड़ेगा।

योगेश जोशी

मार्च, 2019 में भारत ने अकुला वर्ग की परमाणु पनडुब्बी (एसएसएन) पट्टे पर लेने के लिए रूस के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किया। यह परमाणु पनडुब्बी 2025 में भारतीय नौसेना में शामिल हो जाएगी। इससे पहले भारत ने 2012 में मॉस्को से अकुला वर्ग की परमाणु पनडुब्बी एसएसबीएन पट्टे पर ली थी। भारतीय बेड़े में चक्र के नाम से यह पनडुब्बी संभवतः 2025 तक भारतीय नौसेना में नई अकुला पनडुब्बी के चालू होने तक सेवा में रहेगी। इस समझौते के बाद मॉस्को के साथ नई दिल्ली के रक्षा संबंधों को लेकर वाशिंगटन ने गंभीर चिंता व्यक्त की है। शीतयुद्ध के दौरान भारत और अमेरिका के रिश्ते अच्छे नहीं रहे, लेकिन पिछले पच्चीस वर्षों में दोनों देशों के रिश्ते काफी मजबूत हुए हैं। वाशिंगटन ने भारत के रक्षा बाजार में महत्वपूर्ण पैठ बनाई है, जो कभी रूसी रक्षा उद्योग के लिए ही विशिष्ट रूप से संरक्षित था। बाजार की प्रतिस्पर्धा के बावजूद वाशिंगटन और मॉस्को के बीच बढ़ते तनाव ने नई दिल्ली को हाशिये पर डाल दिया है। एक तरफ जहां वाशिंगटन ने प्रतिबंधों के माध्यम से रूस को दंडित करने का प्रयास किया है, वहीं मॉस्को के साथ भारत के रक्षा सौदे उसके लिए असहनीय हो गए हैं। अलबत्ता अमेरिका की नाराजगी भारत के निर्णय लेने की प्रक्रिया को मामूली रूप से ही प्रभावित करेगी।

वर्ष 1966 की शुरुआत में भारत के परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान ने नौसैनिक परमाणु प्रक्षेपण से संबंधित एक संभाव्यता कार्यक्रम शुरू किया। होमी भाभा ने इस अपेक्षा के साथ इसकी शुरुआत की कि अमेरिकी परमाणु ऊर्जा आयोग समुद्री प्रक्षेपण को विकसित करने के लिए भारत की सहायता करेगा। भाभा के अनुरोध को हालांकि तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जॉनसन के विज्ञान और प्रौद्योगिकी कार्यालय ने मुख्य रूप से दूसरे देशों के साथ नौसेना रिएक्टर प्रौद्योगिकी साझा न करने की एडमिरल रिकोवर की नीति के कारण अस्वीकार कर दिया था। वाशिंगटन की परमाणु अप्रसार नीति एक अन्य वजह थी। इसके बाद यह कार्यक्रम लगभग पंद्रह वर्षों तक सुस्त रहा, क्योंकि भारत के परमाणु वैज्ञानिक और भारतीय नौसेना के इंजीनियर प्रक्षेपण के लिए एक व्यावहारिक रिएक्टर प्रणाली को डिजाइन और विकसित करने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

भारत के परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान की गंभीर खामियों के साथ 1974 के शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण के बाद थोपे गए प्रतिबंधों के कारण मुश्किलें खड़ी हो गईं। 1970 के दशक के आखिर में स्वदेशी प्रयासों ने प्रौद्योगिकीय छलांग लगाई, तो भारत सरकार ने सहायता के लिए मॉस्को का रुख किया। 1980 के दशक की शुरुआत में, मॉस्को भारत की स्वदेशी परमाणु पनडुब्बी कार्यक्रम में मदद करने के लिए सहमत हो गया। वह भारत को परमाणु पनडुब्बी भी पट्टे पर देने के लिए राजी हो गया। इसने नौसैनिक परमाणु पनडुब्बी के क्षेत्र में भारत-रूस सहयोग की शुरुआत की।

परमाणु पनडुब्बियों पर मॉस्को और नई दिल्ली के बीच सहयोग से वाशिंगटन कभी खुश नहीं था। जैसे ही भारतीय नौसेना 1987 में सोवियत संघ से अपनी पहली परमाणु पनडुब्बी लेने के लिए तैयार हुआ, अमेरिका ने पट्टे को स्थगित करने के लिए मॉस्को पर भारी दबाव डाला। नवंबर 1987 में, पनडुब्बी के हस्तांतरण की प्रक्रिया लगभग पूरी हो गई थी, लेकिन सोवियत नौसेना के हाई कमान ने पनडुब्बी पर सवार होने से भारतीय चालक दल को रोक दिया और उसे वापस लौट जाने का आदेश दिया। इसके चलते नई दिल्ली और मॉस्को के बीच एक बड़ा कूटनीतिक गतिरोध उत्पन्न हुआ। प्रधानमंत्री राजीव गांधी के सीधे हस्तक्षेप के बाद ही मॉस्को नरम पड़ा। हालांकि सोवियत नीति पर अमेरिकी विरोध का प्रभाव स्पष्ट था। इसके तुरंत बाद, राष्ट्रपति गोर्बाचोव भारत के स्वदेशी परमाणु पनडुब्बी कार्यक्रम में तकनीकी सहायता प्रदान करने के अपने पहले के वादे से मुकर गए। चार्ली-वर्ग की परमाणु पनडुब्बी 1991 की शुरुआत में सोवियत संघ वापस लौट गई, जबकि भारतीय नौसेना उसे रखना चाहती थी।

हालांकि, शीतयुद्ध के दौरान भारत-रूस परमाणु पनडुब्बी सहयोग को अमेरिका की नामंजूरी उसकी परमाणु अप्रसार और हथियारों के नियंत्रण की व्यापक नीति तथा दक्षिण एशिया में रणनीतिक संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर आधारित थी। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद जब भारत-अमेरिका के रणनीतिक रिश्ते प्रगाढ़ हुए, तो वाशिंगटन डीसी ने नई दिल्ली और मॉस्को के बीच तकनीकी साझेदारी को काफी हद तक नजरअंदाज किया।

भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के दौरान भारत के परमाणु पनडुब्बी कार्यक्रम और रूस के साथ उसके संबंध अमेरिका की नीति निर्माण प्रक्रिया में बाधा नहीं बने थे। इसके अलावा, वाशिंगटन डीसी को यह भी एहसास था कि अगर वह भारत को इस तरह का तकनीकी सहयोग नहीं दे सकता, तो नई दिल्ली के पास अन्य उपाय तलाशने के वैध कारण हैं।

इसलिए, अमेरिका की वर्तमान चिंताएं उसके यहां रूस के बारे में चल रही बहस की ही परिणति हैं। बेशक इसने नई दिल्ली को एक अजीब स्थिति में डाल दिया है, फिर भी भारत द्वारा अमेरिका की मांग पर रूस के साथ अपने रक्षा संबंधों को बदलने की संभावना नहीं है, खासकर नौसैनिक परमाणु प्रसार के क्षेत्र में। भारत के स्वदेशी परमाणु पनडुब्बी कार्यक्रम के लिए रूस की निरंतर सहायता महत्वपूर्ण है। रूसी परमाणु पनडुब्बियों को पट्टे पर लेने से न केवल मॉस्को की निरंतर प्रौद्योगिकी सहायता सुनिश्चित होगी, बल्कि भारतीय नौसेना को इससे परिचालन संबंधी अनुभव भी प्राप्त होंगे। यह भारत के भू-रणनीतिक हित में भी है। रूस पर निरंतर अमेरिकी दबाव उसे बीजिंग के साथ हाथ मिलाने के लिए मजबूर कर सकता है। एशिया की भू-राजनीति को संतुलित रखने के लिए मॉस्को का स्वतंत्र रहना आवश्यक है। अगर भारत अमेरिकी दबाव के आगे समर्पण कर देता है, तो यह रूस को बीजिंग के पाले में जाने के लिए और भी प्रेरित करेगा।

-लेखक स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में सेंटर फॉर इंटरनेशनल सिक्योरिटी ऐंड को-ऑपरेशन में स्टैंटन न्यूक्लियर सिक्योरिटी पोस्ट-डॉक्टरल फेलो हैं।

अंतर्ध्वनि

>> युवा नोह हरारी

दोहरी वास्तविकता में जीने के चलते हम धरती पर राज करते हैं

लाखों साल पहले हमारे पुरखे मामूली जानवर थे। प्रागैतिहासिक इंसानों के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात हम यही जानते हैं कि वे जरा भी महत्वपूर्ण नहीं थे। धरती में उनकी हैसियत एक जैली फिश या जुगनू या कठफोड़वे से ज्यादा नहीं थी। इसके विपरीत, आज हम इस ग्रह पर राज करते हैं। सवाल उठता है: वहां से यहां तक हम कैसे पहुंच गए? मनुष्य और अन्य सभी जानवरों के बीच वास्तविक अंतर व्यक्तिगत स्तर पर नहीं होता; दरअसल यह अंतर सामूहिक स्तर पर होता है, इंसान पृथ्वी पर इसलिए राज कर पाते हैं, क्योंकि वे अकेले ऐसे जानवर हैं, जो बड़े लचीलेपन से और बहुत बड़ी संख्या में सहयोगपूर्ण व्यवहार कर पाने में सक्षम हैं। हां, कुछ और जीव भी हैं - जैसे सामाजिक कीट, मधुमक्खियां, चीटियां - ये भी बहुत बड़ी संख्या में सहयोगपूर्ण व्यवहार करते हैं, लेकिन उनके सहयोग में लचीलापन नहीं होता। वे अत्यंत अनम्य तरीके से सहयोग करती हैं। हर कोई ईश्वर पर विश्वास नहीं करता। न ही हर आदमी मानवाधिकारों पर विश्वास करता है। राष्ट्रवाद पर भी हर किसी को यकीन नहीं। लेकिन नोटों की शक्ल में पैसे पर हर कोई यकीन करता है। हम मनुष्य धरती पर इसलिए राज कर पाते हैं, क्योंकि हम दोहरी वास्तविकता में जीते हैं। शेष सभी जीव वस्तुगत यथार्थ में जीते हैं। उनके यथार्थ में वस्तुगत चीजें शामिल हैं, जैसे- नदी, पेड़, शेर और हाथी। हम इंसान भी वस्तुगत यथार्थ में जीते हैं। हमारी दुनिया में भी नदियां हैं, पेड़ हैं और शेर-हाथी वगैरह हैं। लेकिन सदियों से हमने अपने वस्तुगत यथार्थ के ऊपर मनोगत यथार्थ की एक और परत चढ़ा दी है। यह यथार्थ कल्पना से उपजी चीजों से बना है, जैसे- राष्ट्र, ईश्वर, पैसा और कॉरपोरेशन । हैरानी की बात है कि जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ा, मनोगत यथार्थ और मजबूत होता चला गया। आज दुनिया की सबसे बड़ी शक्तियों में यही काल्पनिक वस्तुएं हमारे सामने हैं।

-इस्राइली इतिहासकार और दार्शनिक

मंजिलें और भी हैं

>> प्राची देव

स्पेशल चिल्ड्रन के परिजनों को दे रही हूं जानकारी

स्पेशल चिल्ड्रन की देखभाल करने वालों की कहानियां, बिना शर्त प्यार और विश्वास को प्रदर्शित करती हैं। उनके लिए हर दिन एक नई चुनौती लेकर आती है, लेकिन वे अपने बच्चों को उनकी दिव्यांगता से परे देखते हैं। मैं हैदराबाद की रहने वाली हूं, और अभी इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस में नौकरी करती हूं। यह काम शुरू करने से पहले मैं माइक्रोसॉफ्ट और टाटा कंसलटेंसी जैसी कंपनियों में टेक्नोलॉजी प्रोफेशनल की जिम्मेदारी निभा चुकी हूं। मेरे बड़े भाई डाउन सिंड्रोम से पीड़ित हैं। बचपन से मैंने महसूस किया कि उनकी बीमारी के बारे में मेरे परिवार को कोई जानकारी उपलब्ध ही नहीं थी। हालांकि ऐसे कई संगठन हैं, जो स्पेशल चिल्ड्रन के साथ काम करते हैं, उन्हें स्कूली शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं लेकिन माता-पिता और देखभाल करने वालों के लिए जानकारी और सहयोग का क्षेत्र बहुत सीमित है। मैं अच्छी तरह जानती हूं, कि विशेष जरूरतों वाले बच्चों के परिवार खुद को पूरी तरह से अपने बच्चों के लिए समर्पित तो कर देते हैं, लेकिन जानकारी, व सहयोग के अभाव में इनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए मैंने सोचा कि क्यों न परिवारों के साथ काम किया जाए। मैंने थोड़ा अध्ययन किया तो, हमें पता चला कि बहुत कम माता-पिता होते हैं, जिनको जब तक डॉक्टर न बताए तब तक बच्चे के डाउन सिंड्रोम या ऑटिज्म के बारे में पता होता है। इसी समस्या का समाधान करने के लिए मैंने 'नई दिशा' रिसोर्स सेंटर की शुरुआत की। यह मंच बौद्धिक और विकासात्मक रूप से दिव्यांग बच्चों के परिवारों को आवश्यक जानकारी प्रदान करता है, उनके लिए सुविधाएं खोजने में मदद करता है, और उन्हें स्पेशल चिल्ड्रन, ऑटिज्म पीड़ित बच्चों के अन्य परिवारों से भी जोड़ता है। ये ऑनलाइन और ऑफलाइन बातचीत के माध्यम से देखभाल करने वालों को डाउन सिंड्रोम के विभिन्न चरणों की जानकारी के साथ मदद करता है। माता-पिता के लिए बच्चे की डाइग्नोसिस के बाद का पहला साल हमेशा परेशानी भरा होता है। वे डॉक्टरों के यहां चक्कर काटते हैं और तमाम कोशिशें करते हैं, लेकिन उन्हें नहीं पता कि उन्हें किससे संपर्क करना है। नई दिशा का उद्देश्य विशेष जरूरतों वाले बच्चों के परिवारों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह की जानकारी, मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करना है। ये मदद तीन अलग-अलग तरीकों से की जाती है। सबसे पहले वेबसाइट पर लॉग इन करने पर, उन्हें विषय-विशेषज्ञों के सहयोग से नवीनतम शोध और साक्ष्य-आधारित जानकारी प्रदान की जाती है। यह ऑडियो, वीडियो, इन्फोग्राफिक्स आदि के माध्यम से उपलब्ध है। दूसरा, वेबसाइट विभिन्न शहरों में उपलब्ध सर्विसेस की एक डायरेक्टरी भी प्रदान करती है। यदि हम किसी व्यावसायिक चिकित्सक को अपने साथ जोड़ते हैं, तो हम उसकी डिग्री, अनुभव आदि के बारे में भी विवरण देते हैं, ताकि माता-पिता सही निर्णय ले सकें। तीसरी सर्विस, सेवा सहायता समूह है। इसमें नौ ऑनलाइन सहायता समूह हैं और कुछ ऑफलाइन पहल माताओं द्वारा हैदराबाद, पुणे, बंगलूरू और मुंबई में एक दूसरे का समर्थन करने के लिए शुरू की गई हैं। वर्ष 2015 में स्थापित इस मंच से देश भर में लगभग 3,500 परिवारों को जोड़ा जा चुका है। अच्छा लगता है, जब आपको एक मां फोन करके कहे कि, जब तक आपकी वर्कशॉप अटेंड नहीं की थी तब तक नहीं पता था कि उनकी बेटी स्पीच थैरेपी का लाभ उठा सकती है। मैं इस मंच से अलग-अलग भारतीय भाषाओं में डाउन सिंड्रोम की जानकारी उपलब्ध कराने और एक मोबाइल ऐप लॉन्च करने की योजना बना रही हूं। हमें सहानुभूति की आवश्यकता है, और यह तभी होगा, जब लोग जागरूक होंगे।

वर्ष 2015 में स्थापित इस मंच से देश भर में लगभग 3,500 परिवारों को जोड़ा जा चुका है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

अपराध को धार्मिक चश्मे से न देखें

बलात्कार की किसी भी घटना को जुर्म के अलावा किसी दूसरे रूप में देखना केवल न्याय की प्रक्रिया से पीड़ित पक्ष को वंचित ही नहीं रखता, बल्कि बलात्कारी के हौसलों को बुलंद कर उसे और भी जुर्म करने के लिए प्रेरित करता है।

सुभाषिनी सहगल अली

पिछले एक महीने में देश के तमाम हिस्सों में और खास तौर से उत्तर भारत में, और उसमें भी खासकर उत्तर प्रदेश में बलात्कार की अनगिनत घटनाएं घटी हैं। लगता है कि अब कुछ भी पढ़ें, कुछ भी सुनें, इसका असर पड़ेगा ही नहीं, पर दूसरे दिन कोई नई घटना घटती है और नए सिरे से दिल पर असर पड़ने लगता है। लोग सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं कि यह क्यों हो रहा है? समाज में लोगों का मन क्यों और कैसे बढ़ रहा है? हिंसा को बढ़ावा देने वाला माहौल जोर पकड़ रहा है। कानून के हाथ भी कुछ शिथिल पड़ने लगे हैं या यों कहिए कि कुछ को दबोचने के लिए बढ़ते हैं और कुछ को बचाने के लिए। इन घटनाओं का विरोध भी अक्सर सांप्रदायिक चश्मे को लगाकर होता है। बहुत सारे सवाल हैं; जवाब भी बहुत हैं और नए जवाबों की खोज भी बहुत है।

इस पूरी चर्चा, बहस और मंथन के बीच अचानक एक शिक्षिका के एक फेसबुक पोस्ट ने परेशान किया, जिसमें मुस्लिम महिलाओं के बारे में बेहद आपत्तिजनक बातें लिखी हुई थीं। यह पोस्ट भाजपा की नेता सुनीता सिंह का था। मैंने इसे दो बार पढ़ा और पता चला कि यह फेक नहीं है। मेरे दिमाग में तमाम ख्याल आपस में टकरा रहे थे। बच्चियों, लड़कियों और महिलाओं पर इसका क्या असर पड़ेगा? जिन बच्चों को यह महिला पढ़ाती हैं, उनसे कैसी बातें करती होंगी और उन बातों का उन बच्चों पर क्या असर पड़ता होगा? वह पोस्ट मैंने उत्तर प्रदेश पुलिस की एडीजी (महिला) के पास भेजा और उसके बाद कुशीनगर जिले की पुलिस ने जांच के आदेश दे दिए। वह महिला कुशीनगर की, जिसका संबंध गौतम बुद्ध के साथ सदियों से बना हुआ है, रहने वाली थी। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति, उत्तर प्रदेश, ने महामहिम और प्रमुख सचिव को ज्ञापन भी दिया और पोस्ट लिखने वाली महिला की गिरफ्तारी की मांग की।

कार्रवाई के नाम पर बस इतना हुआ कि भाजपा ने उस महिला को पार्टी से निकाल दिया। पर जांच का क्या हो रहा है? कुछ नहीं। उसे सख्त से सख्त सजा इसलिए दी जानी चाहिए, क्योंकि वह अपराधियों को प्रेरित कर रही है और, ऐसा करके वह तमाम महिलाओं की असुरक्षा बढ़ाने का काम कर रही है। इस तरह की सोच का संदर्भ है। हिंदू महासभा के संस्थापक सावरकर ने अपनी पुस्तक, *भारतीय इतिहास के छह गौरवशाली युग* में शिकायती अंदाज में लिखा है कि हिंदुओं ने कभी मुस्लिम महिलाओं के साथ बलात्कार नहीं किया- ऐसी बात इतिहास की सच्चाइयों से परे है-लेकिन उनको ऐसा करना चाहिए, ताकि उनकी अपनी महिलाएं सुरक्षित रहें। ऐसा नहीं कि किसी एक धर्म के लोग ही बलात्कार करते हैं। ऐसा भी नहीं कि बलात्कारी बलात्कार से पहले शिकार होने वाली के धर्म का पता लगाता है। फिर भी इस जुर्म की परिभाषा अक्सर धर्म के आधार पर की जाती है और उसे जुर्म की श्रेणी से हटाकर धार्मिक कर्तव्य और बहादुरी की श्रेणी में पहुंचा दिया जाता है। बलात्कार की किसी भी घटना को जुर्म के अलावा किसी दूसरे रूप में देखना केवल न्याय की प्रक्रिया से पीड़ित पक्ष को वंचित ही नहीं रखता, बल्कि बलात्कारी के हौसलों को बुलंद कर उसे और भी जुर्म करने के लिए प्रेरित करता है।

-लेखिका माकपा पोलित ब्यूरो की सदस्य हैं।

खुली खिड़की

प्रवासियों द्वारा भेजा गया धन

दुनिया के विभिन्न देशों के नागरिक रोजगार के सिलसिले में दूसरे देश में जाते हैं। एक रिपोर्ट बताती है कि 2018 में भारतीय प्रवासियों ने सबसे ज्यादा धन अपने देश में भेजे हैं।

चीन	67.4
मैक्सिको	35.7
फिलीपींस	33.8
मिस्र	28.9
पाकिस्तान	21
बांग्लादेश	15.5

■ नोट : आंकड़े अरब डॉलर में हैं ■ स्रोत : विश्व बैंक

असीमित पुण्य

सत्संग

गुजरात की राजमाता मीणलदेवी ने भगवान सोमनाथ को सोना अर्पित किया, लेकिन बाद में इस दान को लेकर उनके मन में अहंकार आ गया। रात में सोते समय भगवान सोमनाथ ने राजमाता से सपने में कहा, मेरे मंदिर में एक गरीब महिला दर्शन के लिए आई है। उसके संचित पुण्य असीमित हैं। उनमें से कुछ पुण्य तुम उसे स्वर्ण मुद्राएं देकर खरीद लो। परलोक में काम आएंगे। राजमाता ने उस भक्तिन महिला की खोज कराई। राजा के कर्मचारी उसे मंदिर से राजभवन ले गए। गरीब भक्तिन डर के मारे कांप रही थी। राजमाता ने उससे कहा, मुझे अपने संचित पुण्य दे दो, बदले में मैं तुम्हें स्वर्ण मुद्राएं दूंगी। गरीब ब्राह्मणी ने कहा, महारानी, मुझ गरीब से भला पुण्य कार्य कैसे हो सकते हैं? मैं भीख में मिले चने चबाते-चबाते भूख मिटाते हुए तीर्थयात्रा को निकली। कल मंदिर में दर्शन करने से पूर्व एक मुठ्ठी सत्तू मुझे किसी ने दिए थे। उसमें से आधे सत्तू से मैंने भगवान सोमेश्वर को भोग लगाया तथा शेष सत्तू एक भूखे भिखारी को खिला दिए। जब मैं भगवान को ठीक ढंग से प्रसाद ही नहीं चढ़ा पाई, तो मुझे पुण्य कहां से मिलता? यह सुनकर राजमाता का अहंकार नष्ट हो गया। वह समझ गईं कि खुद भूखी रहकर मुठ्ठी-भर सत्तू भूखे भिखारी को खिलाने से प्रसन्न होकर भगवान सोमेश्वर ने ही उसे असीमित पुण्य अर्पित किए हैं।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

निखिल, दादाजी और चरित्र

यह कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है, जिसने अपने पोते को पैसे और चरित्र के बारे में बताया।

निखिल और उसके दादाजी बातें कर रहे थे। निखिल ने पूछा, दादा जी, पैसे से क्या सारी चीजें खरीदी जा सकती हैं? दादा जी बोले, बेटा, पैसों से हम जरूरतें तो खरीद सकते हैं, पर अपना चरित्र नहीं बदल सकते। चरित्र ही हमारी पहचान होता है। निखिल ने फिर पूछा, दादा जी, चरित्र और पैसों का क्या रिश्ता है? दादा जी बोले, इसे एक कहानी से समझो। एक महिला घूमने गई और एक होटल में रुकी। उसका छह महीने का बच्चा था। महिला ने होटल वाले से बच्चे की बोतल में दूध मंगाया। होटल वाले ने सौ रुपये का बिल लगा दिया। महिला ने सौ रुपये अदा किए और घर को चल दी। रास्ते में बच्चे को फिर भूख लगी। इस बार वह एक छोटी-सी चाय की दुकान के सामने रुकी और चाय वाले से बोतल में दूध मांगा। चाय वाले ने दूध दे दिया। जब महिला ने उससे पैसे पूछे, तो वह बोला, मैडम, मैं बच्चों के दूध के पैसे नहीं लेता। महिला सोचने लगी, होटल वाला रोज हजारों रुपये कमाता है, फिर भी एक गिलास दूध के सौ रुपये लेता है। दूसरी ओर, वह चाय वाला रोज शायद एक हजार रुपये भी न कमाता हो। पर बच्चे के दूध के लिए उसने पैसे नहीं लिए। इन दोनों में से कौन ज्यादा अमीर है? निखिल हैरान था। दादाजी ने कहा, कुछ दिनों पहले मैं दर्जी के पास गया था। वहां एक बड़ी-सी गाड़ी से एक महिला उतरी और बोली, भैया, कोई सस्ता-सा सूट दिखाना। मुझे अपने नौकर के बेटे की शादी में देना है। कुछ ही देर बाद एक और महिला आई, जो शायद किसी घर में मेहरी का काम करती थी। वह बोली, भाई साहब, मुझे कोई अच्छा-सा महंगा-सा सूट दिखाना, मुझे अपनी मालकिन के बेटे की शादी पर देना है। दादाजी निखिल को देखकर बोले, शायद अब तुम तय कर पाओगे, पैसे और चरित्र का क्या रिश्ता है।

कई बार पैसे कमाने की होड़ में हम अपने चरित्र से समझौता कर लेते हैं।